सदी के सुनहरे सपनों को साकार होने का समय आ गया है।

सन्दर्भ स्रोत -

1. *योजना* : विकास को समर्पित मासिक, दिसम्बर-2018, पृ. 17-18.
2. बनर्जी, अभिजीत (2016), *यूनिवर्स बेसिक इन्कम,आइडियाज फॉर इंडिया*, 27 सितम्बर, 2016.
3. वर्धन, प्रणब (2016), बेसिक इन्कम इन अ पुअर कंट्री, *आईडियाज फॉर इंडिया*, 26 सितम्बर, 2016.
4. चक्रवर्ती, लेखा : *फिस्कर कंसॉलिडेश,बजट डेफिसिट्स एण्ड मैक्रो इकॉनमी*, सेज पब्लिकेशन, यूके.
5. भारत सरकार, (2017) : *भारत का आर्थिक सर्वेक्षण, 2016-17*, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली.
6. नीलकेणी (2012) : *रिपोर्ट ऑफ द टास्क फोर्स ऐन आधार-एनेबल्ड यूनीफाइड पेमेंट इंक्रास्ट्रक्चर*, फरवरी, 2012.

*****

पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य जागरुकता

डॉ. दीप्ति श्रीवास्तव

गोरखपुर (उ.प्र.)

सारांश

किसी भी देश की सामाजिक-आर्थिक प्रगति को जानने के लिए वहाँ की व्यक्तियों की स्वास्थ्य स्थिति एवं स्तर का आंकलन करना अति आवश्यक है समाज में व्यक्तियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है दुनिया में तेजी से हो रहे आर्थिक राजनैतिक और सांस्कृतिक बदलाव का मनुष्य के जीवन और स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में नागरिकों को बेहतर इलाज मुहैया करना सरकार का जिम्मा है इस जिम्मेदारी को निभाने के लिये जरूरी है कि सरकारी विभिन्न क्षेत्रों की आबादी सामाजिक और आर्थिक संरचना को ध्यान में रखते हुये उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं के लिये व्यवस्था करें। पूर्वी उत्तरप्रदेश में आबादी के हिसाब से यह स्वास्थ्य जागरूकता का आभाव है पिछले दो दशकों से सुविधाओं, संसाधनों तथा स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पूर्वी उत्तर प्रदेश में निवास करने वाले व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति कितने जागरूक है। इस मुद्दों को ध्यान में रखकर सभी बिन्दुओं की विस्तार में चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द- *स्वास्थ्य जागरुकता, पूर्वी उत्तर प्रदेश,एलोपैथी चिकित्सा पद्धति।*

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्

भूमिका -

स्वास्थ्य मानव जीवन की एक अनमोल सम्पत्ति है मनुष्य के जीवन और उसकी खुशी के लिए स्वास्थ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी अन्य वस्तु की कल्पना करना कठिन है। स्वास्थ्य किसी भी समाज की आर्थिक प्रगति के लिए अनिवार्य है। जो भी व्यक्ति अथवा समाज स्वास्थ्य की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है वह न केवल सम्पन्नता की दृष्टि से पिछड़ा जायेगा। बल्कि जिसे समाज में जीवन मूल्यों की स्थापना करना भी बेहद कठिन है चूँकि अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में व्यक्ति और व्यक्तियों से निर्मित समाज अपने गुणों के अनुरूप सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम नहीं हो पाते है। मानव जीवन में स्वास्थ्य के इसी महत्व को स्वीकारते हुये इसे राज्य सूची में शामिल किया गया है। यहाँ राज्य का यह दायित्व है कि सार्वभौम स्वास्थ्य सेवाओं तक सबकी पहुँच हो तथा भुगतान असमर्थता की वजह से किसी को भी स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित न होना पड़े।

आजादी से पहले देश के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिवर्ष संक्रामक रोगों से करीब 13 लाख लोग काल कवलित हो जाते थे। आजाद भारत में गाँवों के स्वास्थ्य परिदृश्य में काफी सुधार हुआ है पहले गाँवों में निरक्षरता ओर अंधविश्वास के चलते बहुत लोग मौत के मुँह में समा जाते थे। आज चिंता का विषय केवल स्वास्थ्य सुविधा की अनुपलब्धता नहीं है बल्कि हर दिन पनप रहे नये-नये रोग भी परेशानी का सबब बन रहे है। रोगोपचार की अनेक प्रचलित विधियों तथा एलोपैथी चिकित्सा पद्धति के निरंतर विकास के बावजूद बढ़ते जा रहे रोगों पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा है। एड्स का प्रकोप अभी कम हुआ नहीं था कि स्वाइनफ्लू, बीमारी ने विश्व भर में अपने पैर पसार लिये है दूसरी तरफ कैंसर, मलेरिया, मधुमेह, हृदयरोग, रक्तचाप जैसी बीमारियों के उपचार में सुगमता अवश्य आई है। हालांकि डाट्स जैसे कार्यक्रम के जरिये घर के दरवाजे पर रोगी को दवा खिलाने का कार्य डॉक्टर कर रहे हैं। फिर भी रोकथाम पूरी तरह नहीं हो पा रही है।

स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इसलिये आज जरूरत इस बात की है कि हम सभी अपने स्वास्थ्य के प्रति स्वयं जागरूक हो। केवल सरकार से ही सारी उम्मीदें लगाना सहीं नहीं है। बाहरी बीमारियों से बचाव की ढाँचागत सुविधायें उपलब्ध कराना यदि सरकार का कर्तव्य है तो उन सुविधाओं का उचित प्रयोग तथा रख-रखाव हर नागरिक का परम कर्तव्य है निरंतर स्वरूप रहने के लिये एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली का होना जरूरी है जिसके लिये हमें अपनी जीवन शैली में सुधार कर नियमित व्यायाम और संतुलित खान-पान को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। हमें साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये। तनाव रहित दिनचर्या, सृजनात्मकता सक्रियता, समुचित भोजन और पर्याप्त व्यायाम हमारे जीवन को स्वस्थ ओर सुखद बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

शोध की समस्या -

भारत ग्राम प्रधान देश है। देश नगरों की अपेक्षा गाँवों में चिकित्सा सुविधायें ना के बराबर है जिस कारण वहाँ रोग अधिक पनपते हैं। ग्रामीण लोगों में जागरूकता का अभाव है इस कारण वे स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतते हैं और रोग को बढ़ाकर अस्पताल आते हैं जब रोग काबू से बाहर हो जाता है गाँव में बेरोजगारी, अशिक्षा, गरीबी, मादक द्रव्य व्यसन, मद्यपान जैसी गंभीर समस्यायें हैं। जो व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। यद्यपि सरकार का पूरा ध्यान गाँवों की उन्नति पर रहता है व ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन जैसी अन्य योजनायें ग्रामीणों के उत्थान के लिये चलाई जा रही है जिससे वे अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति सचेत रहें व उन्हें दूर करने का प्रयास करने में सरकार से कदम से कदम मिलाए। जरूरत इस बात की है कि भारत का हर नागरिक अपने आपको स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनायें इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमारा ध्यान स्वास्थ्य जागरूकता की ओर गया और हमनें गोरखपुर में लोगों में स्वास्थ्य जागरुकता का अध्ययन किया।

शोध के उद्देश्य -

सरकारी एवं निजी अस्पतालों में आने वाले उत्तरदाताओं में स्वास्थ्य जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध की विधि -

प्रस्तुत अध्ययन में लिये आंकड़ो के लिए गोरखपुर नगरीय क्षेत्र में निवास करने वालों को चुना गया है। आंकड़े 2010-11 के मध्य एकत्र किये गये हैं। सरकार द्वारा अनुमोदित था जिसका स्वामित्व सरकार के पास होता है उसे हमने सरकारी अस्पतालों की श्रेणी में रखा है। चूँकि सरकारी अस्पतालों की संख्या सीमित होने के कारण हमने जिला अस्पताल महिला जिला अस्पताल, टी.वी. अस्पताल मेडिकल कॉलेज का कथन किय गया चूँकि सरकारी अस्पतालों की तुलना में निजी अस्पतालों की संख्या अधिक होने के कारण हमने दैव तथा उद्देश्यपूर्ण निर्दशन द्वारा उन्हीं अस्पतालों का अध्ययन किया है। जहाँ हमारी पहुँच तथा लोगों का रूझान अधिक था जिसमें स्टार नर्सिंग होम, सावित्री हास्पिटल, आनन्द लोक अस्पताल, एम.एम. नर्सिंग होम का अध्ययन किया गया है। स्वास्थ्य सेवा के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रश्नावली की जाँच तथा उसको अंतिम रूप बनाकर उत्तरदाताओं से सत्यता की जाँच की गई तथा शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये वर्णनात्मक तथा अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्पों का प्रयोग किया गया है। दैव निदर्शन पद्धति का चुनाव करते हुये सरकारी से 160 कुल 320 उत्तरदाताओं का अध्ययन किया गया है।

तालिका क्रमांक 1.3

बीमारी के इलाज कराने की उत्तरदाताओं की प्राथमिकता

क्र. सं.		निजी अस्पताल					सरकारी अस्पताल				
		स्टार नर्सिंग होम	आनन्द लोक अस्पताल	सावित्री अस्पताल	एम.एम. नर्सिंग होम	कुल योग	मेडिकल कॉलेज	जिला अस्पताल	महिला जिला अस्पताल	टी.बी. अस्पताल	कुल योग
1.	तुरन्त इलाज हो जाता है।	12 (400)	10 (33.3)	9 (30.0)	10 (3.33)	41 (34.1)	6 (20.0)	7 (23.3)	5 (16.6)	8 (26.6)	26 (21.0)
2.	बीमारी को नजर अंदाज करते हैं	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
3.	किसी विशेषज्ञ की राय लेते हैं	13 (43.3)	14 (46.6)	19 (63.3)	12 (40.0)	58 (48.3)	11 (36.6)	9 (30.0)	11 (36.6)	1 (33.3)	41 (34.0)
4.	बता नहीं सकते	5 (16.0)	6 (20.2)	2 (6.6)	6 (20.0)	19 (15.8)	13 (43.3)	14 (46.0)	14 (46.6)	12 (46.6)	53 (44)
5.	कुल योग	30 (100)	30 (100)	30 (100)	30 (100)	120 (100)	30 (100)	30 (100)	30 (100)	30 (100)	120 (100)

तालिका संख्या 1.3 में बीमारी का इलाज करने पर उत्तरदाताओं की प्राथमिकता को दर्शाते हैं सारणी पर देखने से यह ज्ञात होता है कि सरकारी अस्पतालों में आने वाले 41 (34.1) प्रतिशत तथा निजी अस्पतालों में 58 (48.3) प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत था कि बीमाार पड़ने पर वह किसी विशेषज्ञों से राय लेते हैं। सरकारी अस्पतालों की तुलना में निजी अस्पतालों में विशेषज्ञों की राय लेने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत अधिक है जबकि सरकारी अस्पतालों में कम। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सरकारी अस्पतालों में अधिकांशत: वह व्यक्ति आते हैं जो अशिक्षित तथा गरीब होते हैं। स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का आभाव होता है पहले यह बीमारी को पनपने देते हैं और जब बीमारी गंभीर होती है तो विशेषज्ञों की राय लेते हैं जबकि निजी अस्पतालों में आने वाले अधिकांशत: लोग शिक्षित होते हैं और इनमें स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता होती है। इसलिये बीमार पड़ने पर यह विशेषज्ञ की राय लेते है।

तालिका क्रमांक 1.2

ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति हेतु इलाज कराने की प्राथमिकता

क्र. सं.		निजी अस्पताल					सरकारी अस्पताल				
		स्टार नर्सिंग होम	आनन्द लोक अस्पताल	सावित्री अस्पताल	एम.एम. नर्सिंग होम	कुल योग	मेडिकल कॉलेज	जिला अस्पताल	महिला जिला अस्पताल	टी.बी. अस्पताल	कुल योग
1.	सरकारी अस्पताल	--	--	--	--	30 (100)	30 (100)	3 (100)	3 (100)	30 (100)	120 (100)
2.	निजी अस्पताल	30 (100)	30 (100)	3 (100)	3 (100)	--	--	--	--	--	--
3.	मिशन अस्पताल	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
4.	धमार्थ चिकित्सालय	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
5.	नीम हकीम	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
6.	कुल योग	30 (100)	30 (100)	30 (100)	30 (100)	120 (100)	30 (100)	30 (100)	30 (100)	30 (100)	120 (100)

तालिका संख्या 1.2 में इलाज हेतु मरीजों की चिकित्सा पद्धति की प्राथमिकता को दर्शाते हैं। सारणी पर अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि सरकारी अस्पताल में 64 (53.3) प्रतिशत तथा निजी

अस्पताल में 83 (69.16) प्रतिशत उत्तरदाता ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति को अपनाने वाले थे। ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति को अपनाने वाले सरकारी अस्पतालों में कम तथा निजी अस्पताल अधिक है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सरकारी अस्पतालों में आने वाले अधिकांशत: उत्तरदाताओं अशिक्षित गरीब होने के कारण बीमार पड़ने पर झाड़ फूक कराते हैं। झाड़-फूक के द्वारा ठीक न होने पर ऐलोपैथिक पद्धति को अपनाते हैं। जबकि निजी अस्पताल में आने वाले शिक्षित लोग होते है। ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति अन्य चिकित्सा पद्धति अन्य चिकित्सा पद्धति द्वारा बीमारी का तुरन्त इलाज संभव होता है। वैज्ञानिकों द्वारा ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति में परिणाम स्वरुप यह अन्य चिकित्सा पद्धति में अधिक प्रभावशाली है।

ऐलोपैथिक पद्धति हेतु इलाज कराने की प्राथमिकता को दर्शाते हैं। सारणी पर दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि सरकारी अस्पतालों में 120 (100) प्रतिशत उत्तरदाता तथा निजी अस्पताल में आने वाले 120 (100) प्रतिशत उत्तरदाता है। सरकारी अस्पतालों में वह उत्तरदाता हैं जो ग्रामीण परिवेश में रहते हैं अशिक्षित गरीब हैं, आय के साधन कम है। किसी तरह छोटे-मोटे कार्य कर अपना जीवन यापन करते हैं। इलाज के लिये पैसे जुटा पाना संभव नहीं है इसलिए सरकारी अस्पताल की सेवायें लेना इनकी मजबूरी है। जबकि निजी अस्पताल में आने वाले शिक्षित तथा इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है आय के साधन अधिक होते हैं। इसलिए निजी अस्पताल की महंगी सेवायें लेते हैं।

उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि सरकारी अस्पताल में आने वाले अधिकांशत: उत्तरदाता गरीब अशिक्षित होते हैं। बीमार पड़ने पर यह झाड़फूक कराते हैं और बीमारी जब अधिक गंभीर होती है तो विशेषज्ञ की राय लेते हैं इससे स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का अभाव रहता है। जबकि इसकी तुलना निजी अस्पतालों में आने वाले अधिकांशत: उत्तरदाता शिक्षित होते है इनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होते हैं।

सुझाव-

1. सरकार को स्वास्थ्य जागरुकता अभियान को प्रोत्साहन करना चाहिए।
2. इस क्षेत्र के अधिकतर लोग गरीब अशिक्षित है, अत: शासन को गरीब निवारण संबंधी नई-नई योजनाओं का विकास करना चाहिए साथ ही वर्तमान में लागू गरीबी निवारण संबंधी कार्यक्रमों का प्रभावी प्रवर्तन भी आवश्यक है।
3. इस क्षेत्र के बेरोजगार व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार के रोजगार के सभी मुख्य धारा से जोड़ना भी आवश्यक है। आय बढ़ाने वाले कार्यों एवं महिला एवं पुरुष रोजगार वृद्धि कार्यक्रमों को विकसित करना, स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में सहायक होगा।
4. लोगों में स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करना तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करना स्वास्थ्य जागरूकता के लिये नुक्कड़, नाटक, सिनेमा, टी.वी., पोस्टर, समाचार पत्र प्रदर्शनीय और आदि की सहायता ली जाती है।